इकाई - II

4. कण-कण का अधिकारी

- डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर'

उन्मुखीकरण

सूत कातते थे गाँधीजी, कपड़ा बुनते थे।
चुनते थे अनाज के कंकर, चक्की पीसते थे।
ऐसा था उनका आश्रम,
गाँधीजी के लिए पूजा के समान था श्रम।

प्रश्न

1. गाँधीजी क्या-क्या करते थे?
2. गाँधीजी के अनुसार पूजनीय क्या है?
3. हमारे जीवन में श्रम का क्या महत्व है?

उद्देश्य

सामाजिक काव्य सृजन की प्रेरणा के साथ-साथ छात्रों में समाज कल्याण व उदारता की भावना का विकास करना और उन्हें श्रम का महत्व बताकर उसके पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देना इस पाठ का उद्देश्य है।

विधा विशेष

हर कविता की अपनी-अपनी विशेषता होती है। इसकी विशेषता ओजपूर्ण व प्रेरणाप्रद भाषा है। इसके कवि डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। इनकी प्रसिद्ध रचना 'कुरुक्षेत्र' से यह कविता ली गयी है।

कवि परिचय

डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' हिंदी के प्रसिद्ध कवियों में से एक हैं। उनका जन्म सन् 1908 में बिहार के मुंगेर में हुआ तथा निधन सन् 1974 में हुआ। इन्हें हिंदी का राष्ट्रकवि भी कहा जाता है। 'उर्वशी' कृति के लिए इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। *रेणुका, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा, रसवंती* आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : मेहनत ही सफलता की कुँजी है। मेहनत करने वाला व्यक्ति कभी नहीं हारता। वह हमेशा सफल होता है क्योंकि काल्पनिक जगत को साकार रूप देने वाला वही है। इसके कण-कण के पीछे उसी का श्रम है। इसलिए वही कण-कण का अधिकारी है।

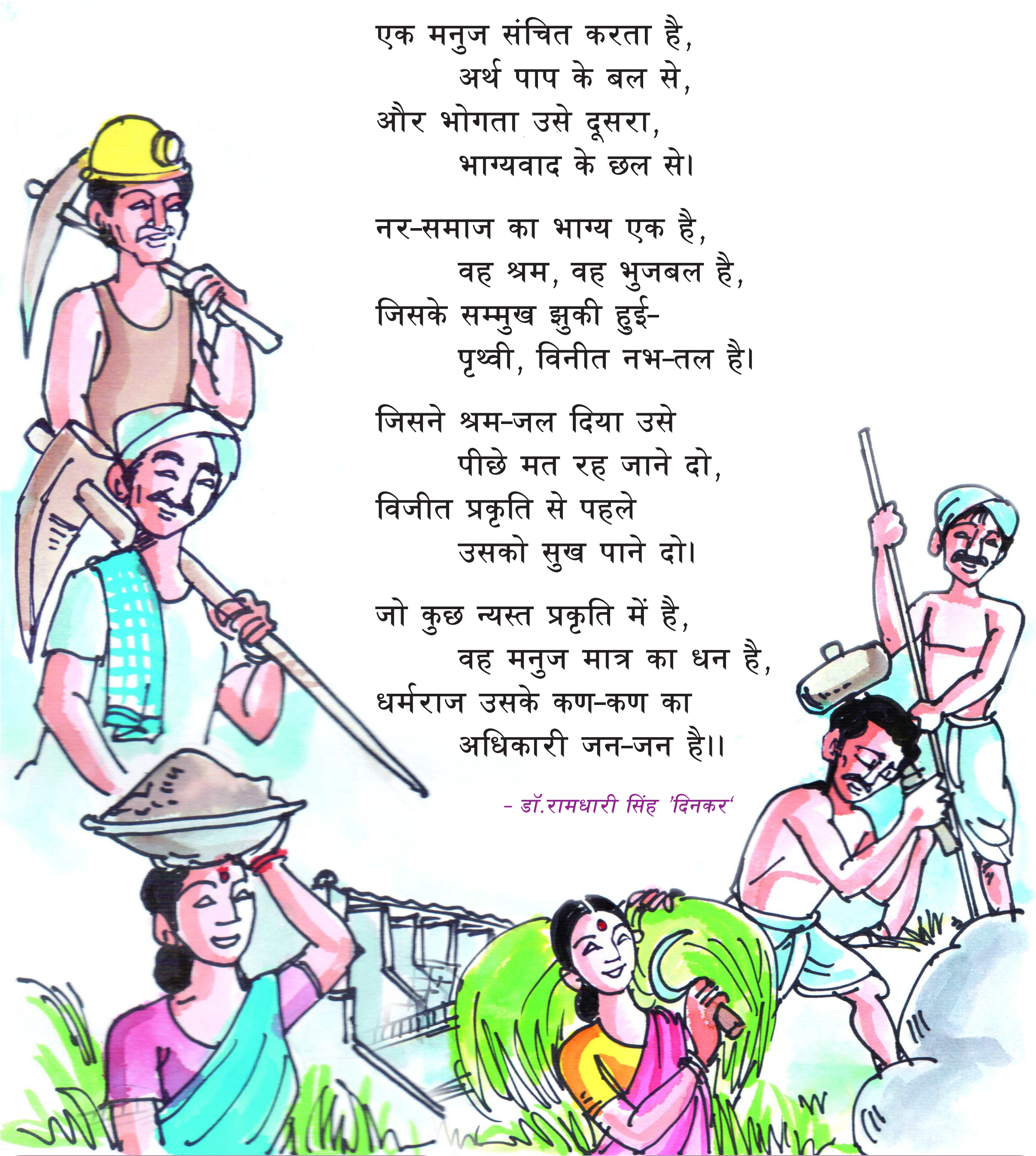

एक मनुज संचित करता है,
अर्थ पाप के बल से,
और भोगता उसे दूसरा,
भाग्यवाद के छल से।

नर-समाज का भाग्य एक है,
वह श्रम, वह भुजबल है,
जिसके सम्मुख झुकी हुई-
पृथ्वी, विनीत नभ-तल है।

जिसने श्रम-जल दिया उसे
पीछे मत रह जाने दो,
विजीत प्रकृति से पहले
उसको सुख पाने दो।

जो कुछ न्यस्त प्रकृति में है,
वह मनुज मात्र का धन है,
धर्मराज उसके कण-कण का
अधिकारी जन-जन है।।

- डॉ.रामधारी सिंह 'दिनकर'

प्रश्न
1. भाग्यवाद का छल क्या है?
2. नर समाज का भाग्य क्या है?
3. श्रमिक के सम्मुख क्या-क्या झुके हैं?
4. श्रम जल किसने दिया?
5. मनुष्य का धन क्या है?
6. कण-कण का अधिकारी कौन है?

परश्रम का उपभोग करे नर, इससे सुखकर स्वयं करे श्रम। - सुमित्रानंदन पंत

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. भाग्य और कर्म में आप किसे श्रेष्ठ मानते हैं? क्यों?
2. श्रम के बल पर हम क्या-क्या हासिल कर सकते हैं?

(आ) पाठ पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. इस कविता के कवि कौन हैं?
2. कविता का यह अंश किस काव्य से लिया गया है?
3. सबसे पहले सुख पाने का अधिकार किसे है?
4. कण-कण का अधिकारी किन्हें कहा गया है और क्यों?

(इ) निम्नलिखित भाव से संबंधित कविता की पंक्तियाँ चुनकर लिखिए।

1. धरती और आकाश इसके सामने नतमस्तक होते हैं।
2. प्रकृति से पहले परिश्रम करने वाले को सुख मिलना चाहिए।

(ई) नीचे दिया गया पद्यांश पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क़दम-क़दम बढ़ाए जा, सफलता तू पाये जा,
ये भाग्य है तुम्हारा, तू कर्म से बनाये जा,
निगाहें रखो लक्ष्य पर, कठिन नहीं ये सफ़र,
ये जन्म है तुम्हारा, तू सार्थक बनाये जा।

1. कवि के अनुसार सफलता किस प्रकार प्राप्त हो सकती है?
2. हमारा सफ़र कब सरल बन सकता है?
3. इस कविता के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. कवि मेहनत करने वालों को सदा आगे रखने की बात क्यों कर रहे हैं?
2. अनुचित तरीके से धन अर्जित करने वाला व्यक्ति सही है या श्रम करने वाला? अपने विचार बताइए।

(आ) कवि ने मज़दूरों के अधिकारों का वर्णन कैसे किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) नीचे दिये गये प्रश्नों के आधार पर सृजनात्मक कार्य कीजिए।

1. कविता में समान अधिकारों की बात की गयी है। 'समानता' से संबंधित कोई घटना या कहानी अपने शब्दों में लिखिए।
2. अपने शब्दों में लिखी गयी घटना या कहानी से कुछ मुख्यांशों का चयनकर लिखिए।
3. चयनित मुख्यांशों में से मूल शब्द पहचानकर लिखिए।
4. लिखे गये मूल शब्दों में से कुछ शब्दों का चयनकर उस पर छोटी सी कविता लिखिए।
5. लिखी गयी कविता का संदेश या सार एक वाक्य में लिखिए और उससे संबंधित कुछ नारे बानिए।

(ई) 'नर समाज का भाग्य एक है, वह श्रम, वह भुजबल है।' जीवन की सफलता का मार्ग श्रम है। अपने विचार व्यक्त कीजिए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. जन, पृथ्वी, धन (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)
2. पाप, सुख, भाग्य (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए और उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. जन-जन, कण-कण (पुनरुक्ति शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए।)
4. मज़दूर मेहनत करता है। (एक-एक शब्द का वचन बदलिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।)
5. मनुष्य, मज़दूर (भाववाचक संज्ञा में बदलकर लिखिए।)

(आ) सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. अधिकार-अधिकारी, भाग्य-भाग्यवान (अंतर बताइए।)
2. यद्‌यपि, पर्यावरण (संधि विच्छेद कीजिए।)
3. श्रम-जल, नभ-तल, भुजबल (समास पहचानिए।)
4. एक मनुज संचित करता है, अर्थ पाप के बल से,
   और भोगता उसे दूसरा, भाग्यवाद के छल से। (पद परिचय दीजिए।)
5. जिसने श्रम-जल दिया उसे पीछे मत रह जाने दो। (कारक पहचानिए।)

(इ) इन्हें समझिए। सूचना के अनुसार कीजिए।

1. जाने दो, पाने दो, बढ़ने दो (संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग समझिए।)
2. एक-पहला, प्रथम, दो-दूसरा, द्‌वितीय (अंतर समझिए।)
3. अभाग्य, दुर्भाग्य, सुभाग्य (उपसर्ग पहचानिए।)
4. प्राकृतिक, अधिकारी, भाग्यवान (प्रत्यय पहचानिए।)
5. पुरुष श्रमिक के रूप में मेहनत करते हैं। (लिंग बदलकर वाक्य लिखिए।)

(ई) नीचे दिया गया उदाहरण समझिए। उसके अनुसार दिये गये वाक्य बदलिए।

जैसे - जिसने श्रम-जल दिया उसे पीछे मत रह जाने दो।

श्रम जल देने वाले को पीछे मत रह जाने दो।

1. जो कुछ न्यस्त प्रकृति में है, वह मनुज मात्र का धन है।
2. जो मेहनत करता है वही कण-कण का अधिकारी है।
3. जो परोपकार करता है वही परोपकारी कहलाता है।

परियोजना कार्य

विश्व श्रम दिवस (मई दिवस) के बारे में जानकारी इकट्‌ठा कीजिए। कक्षा में उसका प्रदर्शन कीजिए।